प्रातः क्लास 8-12-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 बच्चे यहां बैठ कर समझते हैं इन में जो शिव बाबा आये हैं कैसे भी कर के हमको साथ घर जरूर ले जावेंगे। वह आत्माओं का घर है ना। तो बच्चों को जरूर खुशी होती होगी। बेहद का बाप आकर के हमको गुल2 बनाते हैं। कोई कपड़ा आदि नहीं पहनाते हैं। इसको कहा जाता है योगबल। याद का बल। जितना2 टीचर का मर्तबा है उतना और बच्चों को भी मर्तबा दिलाते हैं पढ़ाई से। स्टुडन्ट जानते हैं हम टीचर से फ्लाना बनते हैं। तुम भी समझते हो हमारा बाबा टीचर भी है सद्गुरु भी है। यह है नई बात। हमारा बाबा टीचर है, उनको हम याद करते हैं, हमको पढ़कर यह बना रहे हैं। हमारा बेहद का बाबा आया हुआ है। हम को वापस घर ले जाते हैं। रावण का कोई घर नहीं होता। घर राम का होता है। बाप वहां रहते हैं। शिव बाबा कहां रहते हैं? तुम झट कहेंगे परमधाम में। रावण को तो बाबा नहीं कहेंगे। रावणकहां रहते हैं? पता नहीं। ऐसे नहीं कहेंगे रावण परमधाम में रहते हैं। नहीं। उनका जैसे कि ठिकाना ही नहीं है। भटकता रहता है। तुमको भी भटकाता है। तुम कब रावण को याद करते हो क्या। नहीं। कितना तुमको भटकाते हैं। शास्त्र पढ़ो, भक्ति करो यह करो। बाप कहते हैं इसको कहा जाता है भक्ति मार्ग। रावणराज्य। गांधी भी कहते थे राम-राज्य चाहिए गोया रावण राज्य है। तो बच्चे देखते हैं इस रथ में हमारा बाबा आया हुआ है। बड़ा बाबा है ना। वह आत्माओं से बच्चे2कह बात करते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है स्थानी बाप। और स्थानी बाप की बुद्धि में हो तुम स्थानी बच्चे। क्योंकि हमारा कनेक्शन है हो मूलवतन का। आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... वहां तुम आत्मायें बाप के साथ इकट्ठे रहते हो। फिर अलग होते हो अपना2 पार्ट बजाने। बहुकाल का हिसाब भी चाहिए ना। वह बाप बैठ बतलाते हैं। तुम अभी पढ़ाई पढ़ रहे हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं, वही पहले2 में से जुदा होते हैं। वही फिर कुछ बहुत याद करेंगे तो फिर पहले2 आ जावेंगे। तुम वहां जाते हो, जोड़ी तो जरूर मिलती ही है। प्रवृति मार्ग है ना। यह सम्बन्ध देखो कैसा है। बाप बैठ बच्चों को सारी सृष्टि चक्र का गुह्यतम राज़ समझाते हैं। जो और कोई भी नहीं जानते। गुह्य भी कहा जाता है, गुह्यतम भी कहा जाता है। यह भी जानते हो बाप कोई ऊपर से नहीं बैठ समझाते हैं। यहां आकर समझाते हैं। मैं इस कल्प वृक्ष का बीज रूप हूं। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ को कल्प-वृक्ष कहा जाता है। दुनिया के मनुष्य तो बिल्कुल ही कुछ नहीं जानते। कुम्भ करण के नींद में सोये हुये हैं। फिर बाप आकर जगाते हैं। अभी तुम बच्चों को जगाया है। और सभी सोये पड़े हैं। तुम भी कुम्भ करण के आसुरी नींद में सोये पड़े थे। बाप ने आकर जगाया है। बच्चो जागो! तुम गाफिल हो सोये पड़े हो। उनको कहा जाता है अज्ञान नींद। वह नींद तो सभी करते हैं। सतयुग में भी करते हैं। अभी सभी हैं अज्ञान की नींद में। बाप आकर ज्ञान से सभी को जगाते हैं। अभी तुम बच्चे जागे हो। जानते हो बाबा आया हुआ है हमको ले जावेगा। अभी तो न यह शरीर काम का रहा न आत्मा। दोनों ही पतित बन पड़ी है। एकदम मुलमी का है। 9कैरेट कहें। अर्थात बहुत कम सोना। सच्चा सोना 24कैरेट का होता है। अभी बाप तुम बच्चों को 24कैरेट में ले जाने चाहते हैं। तुम्हारी आत्मा को सच्चा2 गोल्डेनएजेड बनाते हैं। भारत को सोने की चिड़ियां कहते थे। अभी तो है लोहे की, ठिकरे-मिट्टी की चिड़ियां कहेंगे। है तो चैतन्य ना। यह समझने की बातें हैं। जैसे आत्मा को समझते हो वैसे बाप को भी समझ सकते हो। कहते भी हैं चमकता है सितारा। बहुत छोटा सितारा है। डाक्टरों आदि ने बहुत कोशिश की है देखने की। परन्तु दिव्यदृष्टि बिगर देख नहीं सकते। बहुत सूक्ष्म है। कोई कहते हैं आंखों से आत्मा निकल गई। कोई कहते मुख से निकल गई। आत्मा निकलकर जाती है कहां। दूसरे के तन में जाकर प्रवेश करती है। अभी तुम्हारी आत्मा ऊपर में चली जावेगी शांतिधाम। यह पक्का मालूम है। बाप आकर हमको घर ले जावेंगे। एक तरफ हैं कलियुगी दूसरे तरफ हैं सतयुगी। अभी हम संगम पर खड़े हैं। वन्डर है यहां 500करोड़ मनुष्य हैं। और वहां (सतयुग में) सिर्फ नव लाख। क्या हुआ? विनाश हो जाता है। बाप आते ही हैं नई दुनिया की स्थापना करने। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है ना।

फिर पालना भी होती है दो रूप में। ऐसे तो नहीं 4 भुजा वाले कोई मनुष्य होंगे। फिर तो शोभा ही न हो। सो भी न सके। बच्चों को यह भी समझा देते हैं चतुर्भुज है श्रीलo श्रीनाo का कम्बाईन्ड रूप। श्री अर्थात श्रेष्ठ। त्रेता में दो कला कम हो जाते हैं। तो बहुतों को यह नालेज अभी मिलती है। तो इसी स्मृति में रहो। मुख्य है ही दो अक्षर। बाप को याद करो। बस। सभी को बाप कहते हैं बेहद के बच्चों, बेहद के रूहों, शालीग्रामों बाप को याद करो। दूसरे कोई के समझ में नहीं आवेगा। बाप ही पतित-पावन सर्वशक्तिवान है। गाते भी हैं बाबा आपने हमको सारा आसमान ; धरती सभी कुछ दे दिया, ऐसी कोई चीज़ नहीं जो न दी हो। सारे विश्व का राज्य दे दिया है। तुम जानते हो यह लoनाo विश्व के मालिक थे। फिर ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह भी जानते हो विकारी से निर्विकारी, निर्विकारी से विकारी यह 84 जन्मों पार्ट अनगिनत बार बजाया है। इसकी गिनती कर न सके। आदमशुमारी भी गिनती करते हैं बाकी यह जो तमो तमोप्रधान से सतोप्रधान , सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हो। व इनका हिसाब नहीं निकाल सकते कि कितना बार बने हो। बाबा कहते हैं 5000वर्ष का यह चक्र है। लाखों वर्ष की बात तो याद रह भी न सके। अभी तुम्हारे में ज्ञान धारण होती है। तीसरा ज्ञान का नेत्र मिल जाता है। यह खत्म हो जाता है। इन आंखों से तुम पुरानी दुनिया देखते हो, तीसरा नेत्र जो मिलता है उन से नई दुनिया को देखना है। यह दुनिया तो कोई काम की नहीं है। पुरानी दुनिया है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में फर्क देखो कितना है। तुम जानते हो हम ही नई दुनिया के मालिक थे। फिर 84 जन्म लेते2 यह बने हैं। यह अच्छी रीत याद रखना चाहिए। और फिर दूसरों को भी समझाना है कैसे हम यह बनते हैं। विष्णु को फिर पुनर्जन्म लेते2 पतित बनते ब्रह्मा बनते हैं। फिर ब्रह्मा से विष्णु बनते हैं। ब्रह्मा और विष्णु का फर्क देखते हो ना। विष्णु कैसा सजा सजाया बैठा है। यह ब्रह्मा कैसे साधारण बैठा है। तुम जानते हो यह ब्रह्मा वह विष्णु बनने वाले हैं। यह किसको समझाना भी बहुत सहज है। ब्रह्मा विष्णु शंकर का आपस में क्या तेलक है। तुम जानते हो यह विष्णु के दो रूपलoनाo हैं। यही विष्णु देवता से ब्रह्मा मनुष्य बनते हैं। वह विष्णु सतयुग का है, ब्रह्मा यहां का है। बाप ने समझाया है ब्रह्मा से विष्णु बनने में सेकण्ड लगती है, फिर विष्णु से ब्रह्मा बनने में 5000वर्ष लगते हैं। तत त्वम्। ब्रह्मा एक तो नहीं बनते हैं ना। यह बातें सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। यहां कोई मनुष्य गुरु की बात नहीं। इनका भी गुरु शिव बाबा है। तुम ब्राह्मणों का भी गुरु शिव बाबा है। उनको ही सद्गुरु कहा जाता है। तुम बच्चों को शिव बाबा को ही याद करना है। कोई को भी यह समझाना तो बहुत सहज है। शिव बाबा को याद करो, शिव बाबा स्वर्ग नई दुनिया रचते हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान शिव है। वह है हम सभी आत्माओं का बाप। तो भगवान बच्चों को कहते हैं मुझ बाप को याद करो। कितना सहज है। बच्चा पैदा होता है और झट मां मां उनके मुख से आपेही निकलता है। मां बाप के सिवाय और कोई पास नहीं जावेंगे। हां कोई हिर जाते हैं वह फिर और बात है। मां और बाप दो का खेल है ना। मेल फिमेल। फिर पीछे और मित्र-सम्बन्धी आदि होते हैं। उसमें भी जोड़ी2 होंगे चाचा चाची · · · दो का खेल है ना। कुमारी होगी फिर बड़ी होने से कोई उनको चाची कहेंगे, कोई मामी कहेंगे · · · अभी तुम बाप समझाते हैं तुम सभी भाई2 हो। बस। और सभी सम्बन्ध कैसन्ज्ल करनी है। भाई2 समझेंगे तो एक बाप को याद करेंगे। बाप भी कहते हैं बच्चो मुझ एक बाप को याद करो। कितना बड़ा बेहद का बाप है। वह बड़ा बाबा तुमको बेहद का वरसा देने आये हैं। बच्ची2 कहते हैं मन्मनाभव। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह बात भूलो मत। देह अभिमान से ही भूल होती है। पहले2 तो अपने को आत्मा समझना है। हम आत्मा शालीग्राम है। बाप को ही याद करना है। बाप ने समझाया है मैं पतित-पावन हूं। मुझे याद करने से तुम्हारी बैट्रेटरी जो खाली हो गई वह भरपूर हो सतोप्रधान बन जावेगा। पानी की गंगा में तो जन्म-जन्मान्तर घूटका खाया पावन बन न सके।

८-१२-५२

पानी कैसे पतित पावनी हो सकता। ज्ञान से ही सद्गति होती है। पानी से कैसे सदगति होगी। बहुत बेसमझी है। अभी तुम समझते हो हम रावण सम्प्रदाय के मत पर जो सुनते थे सभी सत्य2 कहते थे। अभी वह असत्य निकल पड़ा। ईश्वर सर्वव्यापी कहना असत्य हुआ ना। गीता का भगवान कृष्ण है असत्य है ना। जो सत्य जानते थे वह सभी असत्य निकल पड़ी। यह है ही पापात्माओं की झूठी दुनिया। लेन-देन भी पापात्माओं से होता है। मनसा वाचा कर्मणा पापात्मा ही बनते हैं। यह है ही झूठ खण्ड। अर्थात जो मनुष्य हैं वह झूठ बोलते हैं। सदगुरु को ही सत्य कहा जाता है। सतयुग है सच्च खण्ड। सच्चे देवताओं के आगे झूठ खण्ड वाले मनुष्य माथा टेकते हैं। कितने ढेर मंदिर हैं। जहां मनुष्य अच्छा मंदिर देखते हैं वहां दौड़ते हैं। बेसमझ थे ना। आगे मुसलमान लोग भगाकर ले जाते थे इसलिये पुरुष लोग स्त्रीयों को कहते थे लखनऊ के मंदिर में जो मूर्ती है वह मूर्ति घर में रख दो फिर मुंदिर में जाने की क्या दरकार है। बाहर जाने से रोकते थे। फर्स्ट क्लास चित्र बनाकर घर में रख दो। बात तो एक ही है। आगे चित्र बहुत फर्स्ट क्लास बनते थे। चीज़ तो वही होती है। अभी तुम बच्चों को समझ मिली है। तुम कहते हो हम यह बनने लिये पुरुषार्थ करते हैं। अभी तुम्हारी भक्ति बन्द है। ज्ञान से सदगति होती है। यह सदगति में है ना। विष्णु सदगति ब्रह्मा दुर्गति। बाप ने समझाया है यह बहुत जन्मों के अन्त में है ना। दुर्गति में है ना। बाप कितना सहज समझाते हैं। तुम बच्चियां कितनी मेहनत करती हो। कल्प2 करते हो। पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया बनानी है। कहते हैं ना भगवान जादूगर है, रत्नागर है, सौदागर है। जादूगर तो है ना। पुरानी दुनिया हेल को बदल हेवीन बना देते हैं। कितना जादू है। अभी तुम हेविन के रहवासी बन रहे हो। जानते हो अभी हम हेल के रहवासी हैं। हेल और हेविन अलग हैं। 5000 वर्ष का चक्र है। लाखों वर्ष की बात ही नहीं। यह बातें भूलनी न चाहिए। भगवान खुद मुख से डायरेक्शन देते हैं। भगवानुवाच है ना। कोई जरूर है जो पुनर्जन्म रहित है। कृष्ण को तो शरीर है। शिव को है नहीं। उनको मुख तो जरूर चाहिए तुमको सुनाने लिये। आकर पढ़ाते हैं ना। ड्रामा अनुसार सारी नालेज उनके ही पास है। वह सारे कल्प में एक ही बार आते हैं। दुःखधाम को सुखधाम बनाने। सुख शान्ति का वरसा जरूर बाप से ही मिला है और तब तो उनको चाहते हैं ना। बाप को याद करते हैं। देहली में जो तार भेजी गई थी। उनमें बहुत अच्छा ज्ञान था किसको समझाने का। इस महाभारी महाभारत लड़ाई के बाद ही विश्व में शांति स्थापन होगी। बाप करा रहे हैं ब्राह्मणों द्वारा। ब्राह्मणों के पीछे हैं देवतायें। विराट रूप का चित्र भी है ना। बाप ज्ञान देखो कैसे सहज रीति देते हैं। यहां बैठे भी बाप को याद करो। बाजेली याद करो तो मन्मनाभव है। बाप ही यह सारा ज्ञान देने वाला है। तुम कहेंगे हम बेहद के बाप के पास जाते हैं। बाप हमको शान्तिधाम सुखधाम जाने का रास्ता बताते हैं। यहां बैठे घर को याद करना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। घर को याद करना है। और नई दुनिया याद करनी है। यह पुरानी दुनिया तो खत्म होनी ही है। आगे चलकर तुम वैकुण्ठ को बहुत याद करेंगे। घड़ी2 वैकुण्ठ में जाते रहेंगे। शुरू में बच्चियां घड़ी2 आपस में बैठ वैकुण्ठ में चली जाती थी। यह देखकर बड़े2 घर वाले अपने बच्चों को भेज देते थे। नाम ही रखा था ओम निवास। कितने ढेर बच्चे आये हैं। फिर हंगामा हुआ। बच्चों को पढ़ते भी थे। आपेही ध्यान में चली जाती थी। अभी यह ध्यान दीदार का पार्ट बन्द कर दिया है। यहां भी कब्रस्तान बना देते थे। सभी को सुला देते थे। कहते थे अब शिव बाबा को याद करो। ध्यान में चले जाते थे। अभी तुम बच्चे भी जादूगर हो। किसको भी देखेंगे और वह झट ध्यान में चले जायेंगे। यह जादू कितना अच्छा है। नवधा भक्ति में तो जब एकदम प्राण देने तैयार होते हैं तब उनको दीदार होता है। यहां तो बाप खुद ही आये हैं, तुम बच्चों को पढ़ा कर उंच पद प्राप्त कराते हो। आगे चल तुम बच्चे बहुत मजा करते रहेंगे। जिसका जो पद होगा वह सा0 करते रहेंगे। बाप से ही अभी भी कोई पूछे तो बता सकते हैं। केला गुलाब का फूल है। कौन चम्पा का फूल है। कौन टांगर है। दूध भी होते हैं ना। अच्छा बच्चों को एडमानिंग और नमस्ते।